मक्सिम गोर्की
दान्को का जलता हुआ हृदय

सुप्रसिद्ध सोवियत लेखक मक्सिम गोर्की (१८६८-१९३६) ने बच्चों के लिए उत्कृष्ट कृतियों की रचना की है। लोगों की रक्षा के लिए अपना जीवन अर्पित कर देने वाले दान्को की कहानी जाने-माने लेखक की सर्वश्रेष्ठ रोमानी कथाओं में से एक है।

सभी स्कूलों में
अब अपने
काहिल नहीं अधिक मिलते,
नयी पौध के बालक
कक्षा, कक्षा में
बढ़ते चलते।

फिर भी मुझको
किसी स्कूल के
निकट मिल गया दोसाला,
बातचीत मैंने उससे की।

और प्रश्न यह कर डाला:
"सुनो,
मुझे इतना बतलाओ,
कुछ शब्दों में यह समझाओ–
इसमें भी क्या तुक है आख़िर
क्या पाते हो साल गंवाकर?
एक क्लास में
तुम पूरे दो साल लगाकर?

पांच साल की बनी योजना
तीन-चार सालों में अपना
पूरा ज़ोर लगाकर उसको
लोग हमारे निपटाते,
एक क्लास में तुम तो लेकिन
दो सालों तक रुक जाते!

बर्फ़ पिघलते ही किसान भी
राह सभी लेते खेतों की,
नहीं समय अपना खोयें,
कितनी धरती में हल जोतें,
वे कितनी धरती बोयें!
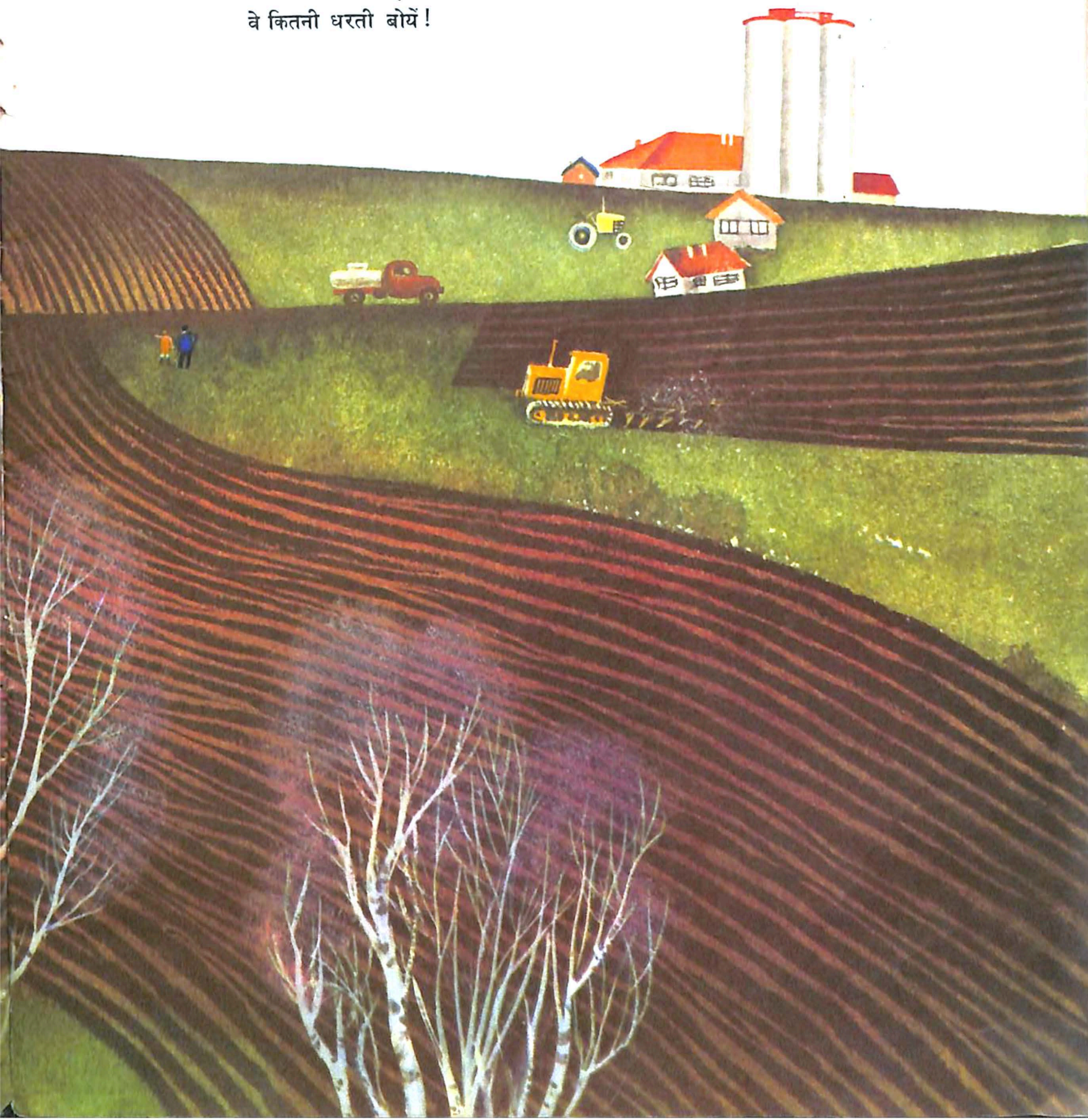
खनिक खान से
भू-खदान से
खनिज निकाल उबार रहे,
ह्वेल शिकारी
श्रम कर भारी
ह्वेलें कितनी मार रहे!
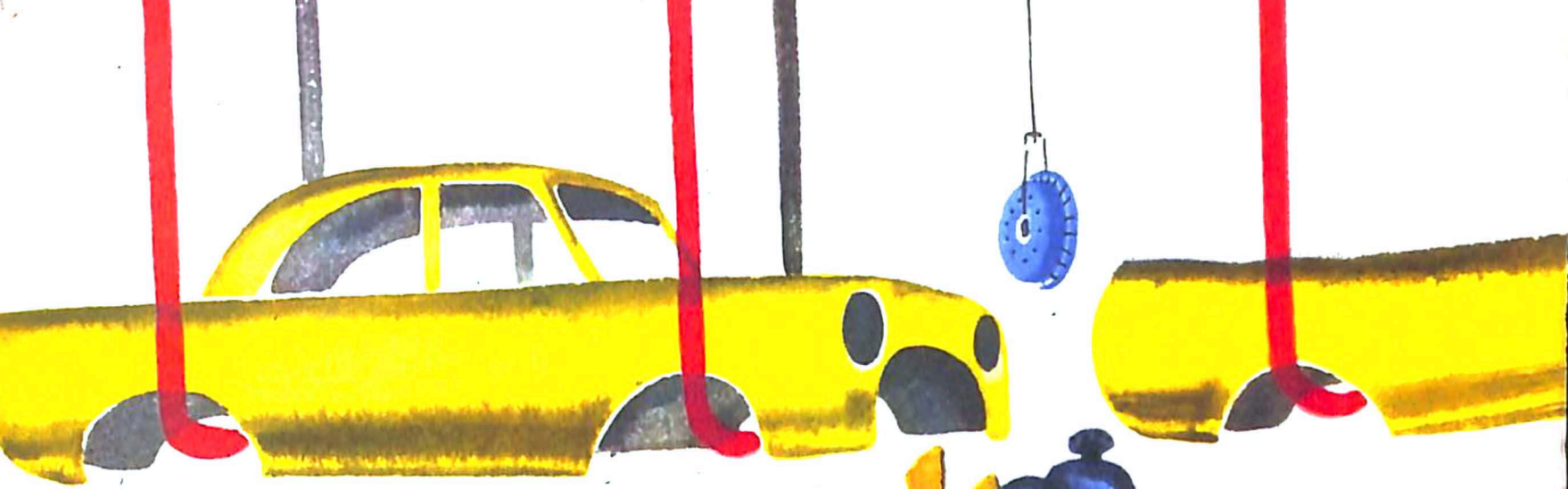
एक साल में
कपड़ा मिल में
कितना कपड़ा बन जाता,
कितनी बनें मशीनें, इंजन
गिनना मुश्किल हो जाता!
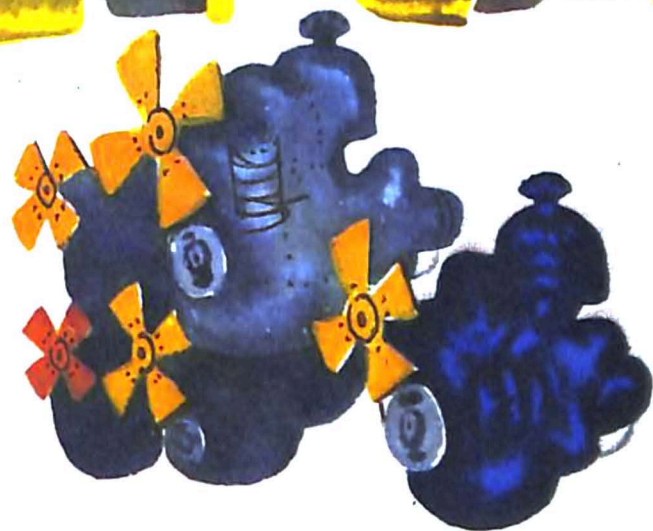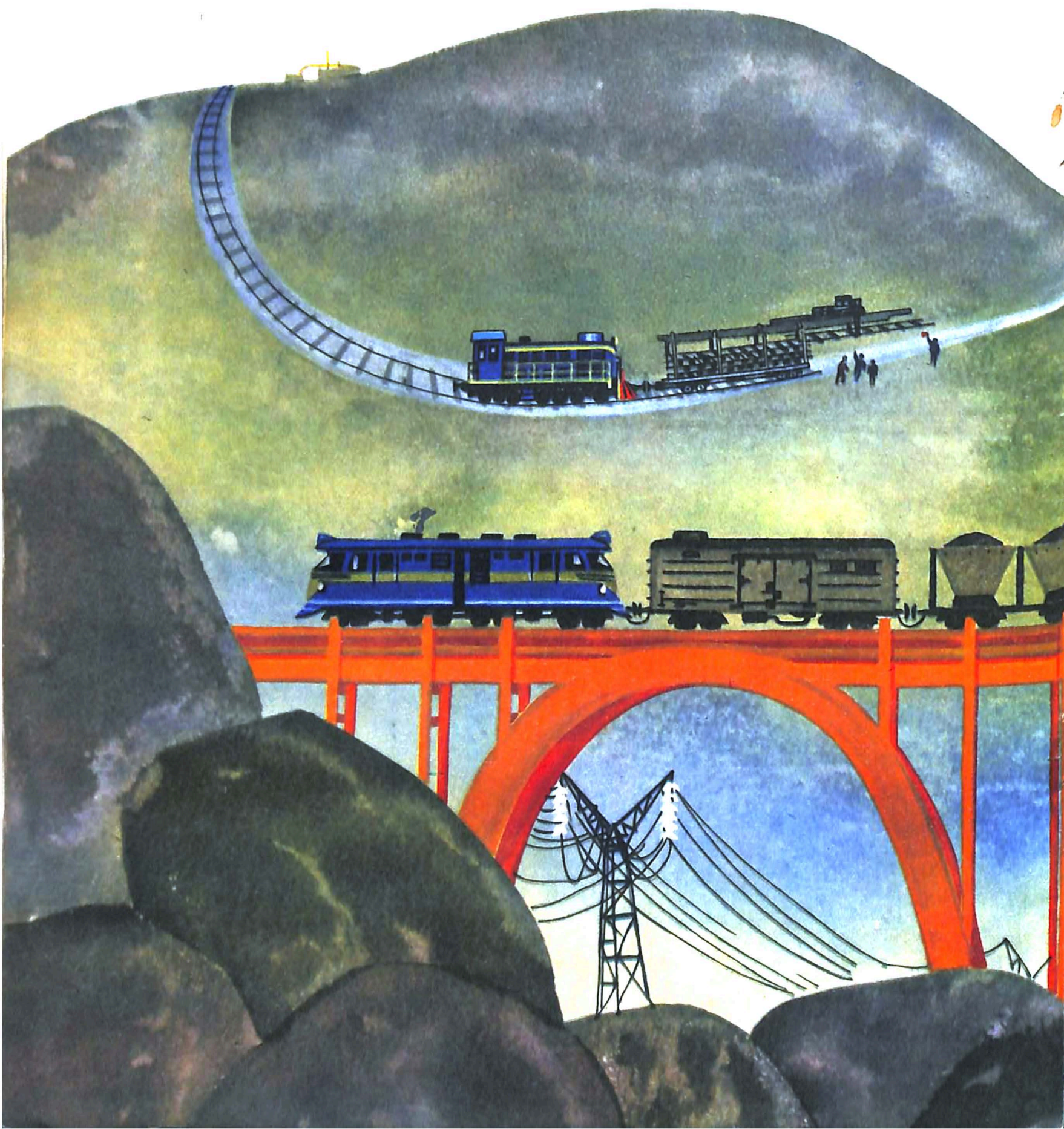
बिछें रेल की नयी पटरियां
और स्लीपर कई हज़ार,
मोटे-मोटे अंक निकालें
सभी रसाले
बारह बार।
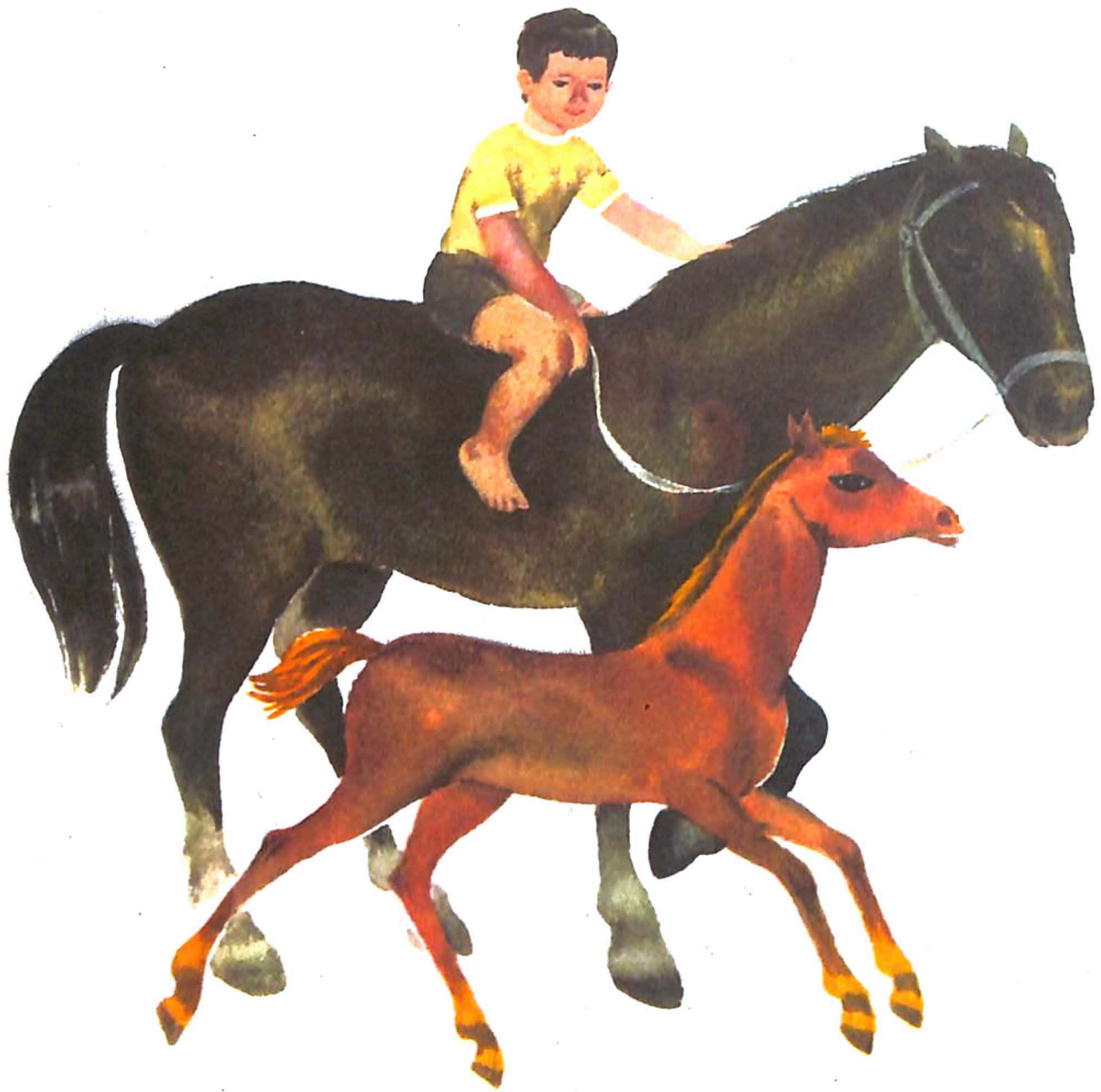
एक साल में बन जाता है
कई मंज़िला नया मकान,
बछड़ा गाय, सांड़ बन जाता
और बछेरा
अश्व जवान।

साल गुज़रते,
कभी न मुड़ते,
आगे ही बढ़ते जाते,
सन् पचास को
वापस आते
देख कभी क्या हम पाते?

नहीं, साल यह बीते ज्योंही
नया साल आगे आये,
इसका मतलब
नहीं छात्र भी
साल टाल अपना पाये।

फिर स्कूल में तुम को वे ही
पाठ पड़ेंगे दुहराने,
छोटों के संग
और साथ में
ताने भी होंगे खाने।

स्वयं समझते
अगर पिछड़ते
और साल अपना खोते,
इसका मतलब आगे बढ़ती
कक्षा जो ऊपर चढ़ती,
जुदा सदा को तुम होते...

कल खेला फ़ुटबाल मज़े से
खेल बहुत अच्छा फ़ुटबाल,
लेकिन तब, यदि इससे तेरा
बुरा न हो पढ़ने में हाल।

А. Митяев
КОСМОНАВТ И ГРИШКА
На языке хинди

A. Mityayev
GRISHKA AND THE ASTRONAUT
in Hindi

सोवियत संघ में मुद्रित

M $\frac{4803010102-242}{031(01)-84}$ 401-84